महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर
MAHARSHI DAYANAND SARASWATI UNIVERSITY, AJMER

विशेष: एमडीएसयू का 39वाँ स्थापना दिवस

एमडीएसयू के 39वें स्थापना दिवस पर शिक्षा, शोध और नैतिक मूल्यों पर रहा जोर

अजमेर. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय का 39वां स्थापना दिवस शनिवार को गरिमामय वातावरण में मनाया गया। समारोह के मुख्य अतिथि राजस्थान के राज्यपाल एवं विश्वविद्यालय के कुलाधिपति हरिभाऊ किसनराव बागडे ने कहा कि विश्वविद्यालयों की भूमिका केवल डिग्री प्रदान करने तक सीमित नहीं होनी चाहिए, बल्कि उन्हें चरित्र निर्माण, नैतिक शिक्षा, अनुसंधान और राष्ट्र निर्माण के केंद्र के रूप में विकसित होना चाहिए। राज्यपाल ने कहा कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 मूल्य आधारित शिक्षा को नई दिशा दे रही है। उन्होंने शिक्षकों से विद्यार्थियों की बौद्धिक क्षमता के साथ नैतिक मूल्यों के विकास पर भी विशेष ध्यान देने का आह्वान किया। उन्होंने नकल-मुक्त परीक्षा प्रणाली को गुणवत्तापूर्ण शिक्षा की आधारशिला बताते

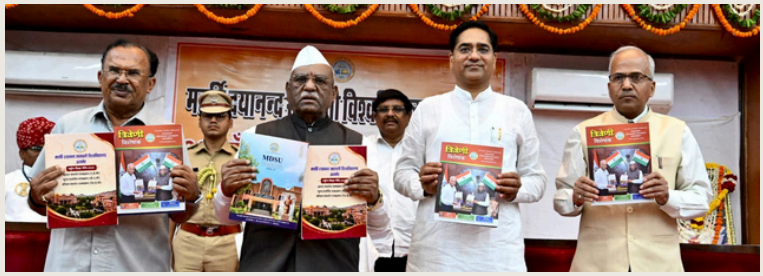

हुए विद्यार्थियों से नशामुक्त भारत अभियान से जुड़ने का भी आह्वान किया। राजस्थान विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी ने कहा कि विश्वविद्यालयों को परीक्षा केंद्रों की परंपरागत भूमिका से आगे बढ़कर अनुसंधान, नवाचार, स्टार्टअप और भारतीय ज्ञान परंपरा के उत्कृष्ट केंद्र बनना होगा। उन्होंने आधुनिक तकनीक और भारतीय संस्कृति के समन्वय को भविष्य की शिक्षा का आधार बताया। जल संसाधन मंत्री एवं विश्वविद्यालय के पूर्व छात्र सुरेश सिंह रावत ने विश्वविद्यालय में एल्यूमिनी एसोसिएशन भवन एवं स्वागत कक्ष के निर्माण के लिए विधायक निधि से 50 लाख रुपये देने की घोषणा की। उन्होंने अजमेर और पुष्कर की सांस्कृतिक एवं ऐतिहासिक विरासत पर शोध को बढ़ावा देने की आवश्यकता भी जताई। कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय को अनुसंधान, कहा कि विश्वविद्यालय को अनुसंधान, नवाचार, उद्योग-शिक्षा सहयोग और उद्यमिता का प्रमुख केंद्र बनाने की दिशा में कार्य किया जा रहा है। आगामी सत्र से भारतीय ज्ञान परंपरा और नैतिक मूल्यों पर आधारित नए पाठ्यक्रम भी शुरू किए जाएंगे। समारोह के दौरान विभिन्न नई एवं नवीनीकृत परियोजनाओं का लोकार्पण और शिलान्यास किया गया। विश्वविद्यालय के पॉडकास्ट स्टूडियो, वीडियो कॉन्फ्रेंसिंग कक्ष तथा अन्य विकास कार्यों का शुभारंभ हुआ। त्रैमासिक पत्रिका 'त्रिवेणी' के विशेषांक का विमोचन किया गया। रक्तदान एवं स्वास्थ्य परीक्षण शिविर, ईसीजी केंद्र का उद्घाटन तथा "एक पेड़ माँ के नाम" अभियान के तहत पौधारोपण भी किया गया। समारोह में जनप्रतिनिधियों, शिक्षाविदों, विश्वविद्यालय अधिकारियों, शिक्षकों, शोधार्थियों और विद्यार्थियों की बड़ी संख्या में उपस्थिति रही।

39 वर्षों का स्वर्णिम सफर: ज्ञान, नवाचार और उत्कृष्टता की पहचान बना एमडीएसयू

हर संस्थान की अपनी एक कहानी होती है संघर्ष, संकल्प और सफलता की कहानी। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (एमडीएसयू), अजमेर की कहानी भी कुछ ऐसी ही है। 39 वर्ष पहले शिक्षा के एक छोटे से संकल्प के रूप में शुरू हुई यह यात्रा आज लाखों विद्यार्थियों की उम्मीदों, उपलब्धियों और भविष्य का आधार बन चुकी है।

वर्ष 1987 में स्थापित एमडीएस विश्वविद्यालय ने समय के साथ केवल अपने भवनों और विभागों का विस्तार ही नहीं किया, बल्कि ज्ञान, शोध और नवाचार की ऐसी संस्कृति विकसित की जिसने इसे राजस्थान के प्रमुख विश्वविद्यालयों की अग्रिम पंक्ति में ला खड़ा किया। यहां से निकले विद्यार्थी आज प्रशासन, शिक्षा, पत्रकारिता, विज्ञान, न्यायपालिका, उद्योग, खेल और सामाजिक सेवा सहित अनेक क्षेत्रों में अपनी प्रतिभा का परचम लहरा रहे हैं। बदलते समय के साथ विश्वविद्यालय ने शिक्षा को नई सोच से जोड़ा है। नई शिक्षा नीति-2020 की भावना के अनुरूप विद्यार्थियों को केवल डिग्री तक

सीमित न रखते हुए उन्हें आत्मनिर्भर और सक्षम बनाने की दिशा में निरंतर कार्य किया जा रहा है।इसी सोच को आगे बढ़ाते हुए विश्वविद्यालय "लर्न, अर्न एंड परफॉर्म" के सिद्धांत को प्रोत्साहित कर रहा है। इसका उद्देश्य विद्यार्थियों को पहले गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, फिर कौशल एवं अनुभव के माध्यम से रोजगार और आजीविका के अवसर तथा अंततः अपने ज्ञान और क्षमता का उत्कृष्ट प्रदर्शन कर समाज एवं राष्ट्र के विकास में सार्थक योगदान देने के लिए तैयार करना है। विश्वविद्यालय की पहचान केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं है। यहां राष्ट्रीय और अंतरराष्ट्रीय संगोष्ठियां, शोध परियोजनाएं, कार्यशालाएं, नवाचार कार्यक्रम, खेल प्रतियोगिताएं, सांस्कृतिक आयोजन तथा सामाजिक सरोकारों से जुड़े अभियान विद्यार्थियों के व्यक्तित्व को नई दिशा देते हैं। उद्योगों, सरकारी संस्थानों और विभिन्न संगठनों के साथ सहयोग एवं एमओयू के माध्यम से विद्यार्थियों को व्यावहारिक प्रशिक्षण, इंटर्नशिप और रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराए जा रहे हैं। परिसर के विकास, हरित वातावरण के संरक्षण, डिजिटल सुविधाओं के विस्तार तथा सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत के संरक्षण की दिशा में किए गए प्रयास विश्वविद्यालय की दूरदर्शी सोच को दर्शाते हैं। आधुनिक शिक्षा और भारतीय मूल्यों का संतुलित समन्वय एमडीएसयू की विशिष्ट पहचान बन चुका है। 39 वर्षों का यह गौरवशाली सफर केवल बीते वर्षों का लेखा-जोखा नहीं, बल्कि भविष्य की अनंत संभावनाओं का उद्घोष है। आज जब एमडीएसयू अपनी स्थापना के 39 वर्ष पूर्ण कर रहा है, तब यह उपलब्धियों का उत्सव मनाने के साथ-साथ आने वाले वर्षों के लिए एक नए संकल्प का भी प्रतीक बनकर उभरता है। यह विश्वास और उम्मीद के साथ आगे बढ़ रहा है कि शिक्षा की यह ज्योति आने वाली पीढ़ियों के सपनों को नई उड़ान देगी और महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय उत्कृष्टता, नवाचार और राष्ट्र निर्माण की अपनी गौरवशाली यात्रा को और अधिक ऊंचाइयों तक पहुंचाएगा।

विश्वविद्यालय का प्रवेश उत्सव: सपनों को मिल रही मंज़िल, भविष्य को मिल रही नई दिशा

बारहवीं या स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद हर विद्यार्थी के सामने सबसे बड़ा सवाल होता है अब आगे क्या? इसी सवाल का जवाब बनकर विश्वविद्यालय का नया प्रवेश सत्र विद्यार्थियों के लिए अवसरों के अनेक द्वार खोल रहा है। इन दिनों विश्वविद्यालय परिसर में हर ओर नए चेहरों की उत्सुकता, अभिभावकों की उम्मीदें और बेहतर भविष्य के सपनों की हलचल देखने को मिल रही है। यही माहौल 'विश्वविद्यालय का प्रवेश उत्सव' है, जहां हर प्रवेश एक नए सपने की शुरुआत है। विश्वविद्यालय में स्नातक, स्नातकोत्तर, डिप्लोमा और अन्य पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया जारी है। दूर-दराज़ के क्षेत्रों से भी बड़ी संख्या में विद्यार्थी अपने पसंदीदा विषयों में प्रवेश लेने पहुंच रहे हैं। परिसर में प्रवेश संबंधी जानकारी प्राप्त करने, आवेदन प्रक्रिया पूरी करने और अपने भविष्य की दिशा

तय करने के लिए विद्यार्थियों का उत्साह साफ़ दिखाई दे रहा है।बदलते समय के साथ विद्यार्थियों की रुचि भी बदल रही है। पारंपरिक विषयों के साथ-साथ रोजगारोन्मुखी, कौशल आधारित और बहुविषयक पाठ्यक्रमों की ओर युवाओं का आकर्षण बढ़ रहा है। विश्वविद्यालय भी विद्यार्थियों की इन आवश्यकताओं को ध्यान में रखते हुए गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, शोध, नवाचार और व्यावहारिक ज्ञान पर विशेष जोर दे रहा है, ताकि शिक्षा केवल डिग्री तक सीमित न रहे, बल्कि सफल करियर का आधार बन सके। प्रवेश के लिए आने वाले विद्यार्थियों को आवेदन प्रक्रिया, पाठ्यक्रम, छात्रवृत्ति, पुस्तकालय, प्रयोगशालाओं, खेल सुविधाओं और अन्य छात्र सेवाओं की जानकारी भी उपलब्ध कराई जा रही है। इससे नए विद्यार्थियों को विश्वविद्यालय की शैक्षणिक संस्कृति को समझने और अपने लिए सही विकल्प चुनने में आसानी हो रही है।

विश्वविद्यालय का मानना है कि प्रवेश केवल एक औपचारिक प्रक्रिया नहीं बल्कि जीवन की नई यात्रा का पहला कदम है। आज लिया गया सही निर्णय आने वाले वर्षों में विद्यार्थियों के करियर और व्यक्तित्व निर्माण की मजबूत नींव बन सकता है। यही कारण है कि विश्वविद्यालय विद्यार्थियों को उनकी रुचि और क्षमता के अनुरूप शिक्षा प्राप्त करने के लिए प्रेरित कर रहा है। नए शैक्षणिक सत्र के साथ विश्वविद्यालय एक बार फिर युवा सपनों, नई ऊर्जा और नई संभावनाओं का केंद्र बन गया है। हर नए प्रवेश के साथ एक नया लक्ष्य जुड़ रहा है, एक नया सपना आकार ले रहा है और भविष्य की सफलता की ओर एक मजबूत कदम बढ़ रहा है। यही है विश्वविद्यालय का प्रवेश उत्सव जहाँ शिक्षा केवल कक्षाओं तक सीमित नहीं, बल्कि सपनों को साकार करने की शुरुआत बन जाती है।

नए प्रवेश, नए अनुभव

एमडीएस विश्वविद्यालय के एमबीए, एमएससी, एमए, फार्मेसी, योग तथा अन्य विभागों के विद्यार्थियों से बातचीत के दौरान उन्होंने अपने पहले दिन के अनुभव साझा किए। विद्यार्थियों ने बताया कि पहले दिन विभाग में उनका स्वागत आत्मीय एवं सकारात्मक वातावरण में हुआ। शिक्षकों और विभागीय स्टाफ ने उनका परिचय कराया तथा पाठ्यक्रम की रूपरेखा, अध्ययन पद्धति, विभागीय गतिविधियों और भविष्य में उपलब्ध करियर के अवसरों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इससे उन्हें विश्वविद्यालय के शैक्षणिक माहौल को समझने का अवसर मिला और कोर्स से जुड़े कई प्रश्नों एवं शंकाओं का समाधान भी हुआ। विद्यार्थियों ने बताया कि उन्होंने अपनी रुचि, बेहतर करियर की संभावनाओं, व्यावहारिक ज्ञान प्राप्त करने और अपने कौशल को विकसित करने के उद्देश्य से इन कोर्सेज का चयन किया। उनका मानना है कि यह पाठ्यक्रम उन्हें विषय की गहन समझ देने के साथ-साथ भविष्य में रोजगार, शोध, उद्यमिता तथा समाज के लिए बेहतर कार्य करने के अवसर भी प्रदान करेगा। कुछ विद्यार्थियों ने बताया कि वे आगे चलकर अपना स्वयं का प्रशिक्षण या सेवा केंद्र स्थापित करना चाहते हैं, जबकि कुछ अपने क्षेत्र में विशेषज्ञता हासिल कर बेहतर पेशेवर बनना चाहते हैं। विद्यार्थियों ने कहा कि पहले ही दिन शिक्षकों के साथ हुए संवाद, विभाग के अनुशासित एवं सहयोगात्मक वातावरण तथा वरिष्ठ विद्यार्थियों के अनुभवों ने उनका आत्मविश्वास बढ़ाया। उन्हें यह विश्वास मिला कि विश्वविद्यालय मे गुणवत्तापूर्ण शिक्षा, नियमित प्रायोगिक प्रशिक्षण और निरंतर मार्गदर्शन के माध्यम से वे अपने लक्ष्यों को सफलतापूर्वक प्राप्त कर सकेंगे।

भारतीय ज्ञान परंपरा पर केंद्रित एनईपी ओरिएंटेशन में 250 से अधिक शिक्षक जुड़े

अजमेर. नई शिक्षा नीति (एनईपी) के प्रभावी क्रियान्वयन और भारतीय ज्ञान परंपरा को उच्च शिक्षा से जोड़ने के उद्देश्य से आयोजित आठ दिवसीय ऑनलाइन ओरिएंटेशन एवं सेंसिटाइजेशन कार्यक्रम का सफलतापूर्वक समापन हुआ था। कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न उच्च शिक्षण संस्थानों के 250 से अधिक शिक्षकों एवं संकाय सदस्यों ने ऑनलाइन सहभागिता की थी। आर्यभट्ट इंटरनेशनल कॉलेज ऑफ टेक्निकल एजुकेशन तथा मालवीय मिशन टीचर्स ट्रेनिंग सेंटर (एमएमटीटीसी), महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय, अजमेर के संयुक्त तत्वावधान में आयोजित समापन सत्र में विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल मुख्य अतिथि रहे थे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा था कि भारतीय ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षा व्यवस्था विद्यार्थियों के समग्र व्यक्तित्व के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। उन्होंने यह भी कहा था कि राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन के लिए शिक्षकों की सक्रिय भागीदारी और सतत प्रशिक्षण आवश्यक है।

आर्यभट्ट ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के चेयरपर्सन डॉ. अमित शास्त्री ने कहा था कि शिक्षा व्यवस्था में परिवर्तन हमेशा चुनौतीपूर्ण होता है और इसे सफल बनाने के लिए निरंतर प्रयास आवश्यक हैं। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया था कि भारतीय संस्कृति, मूल्यों और ज्ञान परंपरा पर आधारित शिक्षा व्यवस्था देश के भविष्य को नई दिशा देने में महत्वपूर्ण साबित होगी।

आठ दिवसीय इस ऑनलाइन प्रशिक्षण कार्यक्रम में देशभर के विभिन्न विश्वविद्यालयों एवं महाविद्यालयों के शिक्षकों ने सहभागिता की। कार्यक्रम के दौरान भारतीय ज्ञान परंपरा, राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी, अनुसंधान, नवाचार और मूल्य आधारित शिक्षा जैसे विषयों पर विशेषज्ञों ने व्याख्यान दिए। प्रत्येक सत्र के अंत में प्रतिभागियों के साथ प्रश्नोत्तर और संवाद भी आयोजित किया गया, जिससे कार्यक्रम अधिक सहभागितापूर्ण रहा।

एमएमटीटीसी के निदेशक प्रो. शिव प्रसाद ने अपने संबोधन में भारतीय ज्ञान परंपरा के महत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा था कि ऐसे प्रशिक्षण कार्यक्रम वर्तमान शैक्षिक परिदृश्य में अत्यंत प्रासंगिक हैं। उन्होंने कार्यक्रम के सफल आयोजन की सराहना करते हुए इसे राष्ट्रीय शिक्षा नीति के प्रभावी क्रियान्वयन की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल बताया था।

महाविद्यालय के प्राचार्य डॉ. इंद्रप्रीत छाबड़ा के संयोजन तथा आईटी विभाग के सहायक आचार्य उत्सव चौहान के सह-संयोजन में आयोजित इस आठ दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान कुल 16 तकनीकी सत्र आयोजित किए गए थे। इन सत्रों में भारतीय ज्ञान परंपरा, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी के विभिन्न आयामों पर विशेषज्ञों ने अपने विचार साझा किए थे। समापन अवसर पर आयोजकों ने सभी प्रतिभागियों का आभार व्यक्त किया था।

गुरुपूर्णिमा निमित्त हार्दिक शुभेच्छा!

विशेष : गुरु पूर्णिमा

रोशनी उन हाथों की, जिन्होंने जीवन सँवारा

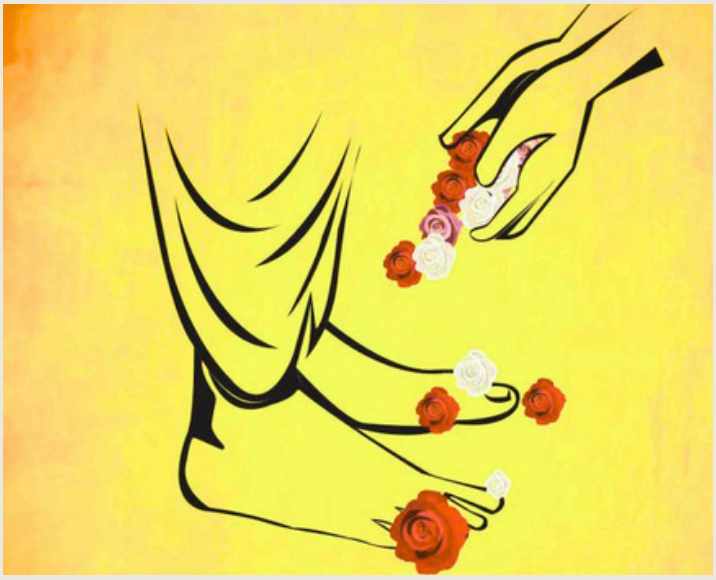

**"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय।
बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥"**

कल्पना कीजिए एक ऐसे संसार की, जहाँ ज्ञान तो है, लेकिन उसे सही दिशा देने वाला कोई नहीं। जहाँ पुस्तकें हैं, पर उन्हें समझाने वाला कोई मार्गदर्शक नहीं। ऐसा जीवन अंधकार से भरा होगा। इसी अंधकार को ज्ञान के प्रकाश से दूर करने वाले व्यक्ति को भारतीय संस्कृति ने 'गुरु' का सर्वोच्च सम्मान दिया है। गुरु केवल पढ़ाने वाला शिक्षक नहीं, बल्कि वह शक्ति है जो व्यक्ति के भीतर छिपी संभावनाओं को पहचानकर उसे सफलता, संस्कार और आत्मविश्वास की राह दिखाती है। ऐसे ही गुरुओं के प्रति श्रद्धा, सम्मान और कृतज्ञता प्रकट करने का पर्व है गुरु पूर्णिमा। आषाढ़ मास की पूर्णिमा को मनाया जाने वाला यह पर्व भारतीय संस्कृति की हजारों वर्षों पुरानी गुरु-शिष्य परंपरा का जीवंत प्रतीक है। यह दिन केवल पूजा-अर्चना का नहीं, बल्कि अपने जीवन में प्रकाश फैलाने वाले हर उस व्यक्ति को याद करने का अवसर है, जिसने हमें कुछ सिखाया है। माता-पिता, शिक्षक, आध्यात्मिक गुरु, मार्गदर्शक और जीवन के अनुभव ये सभी किसी न किसी रूप में हमारे गुरु हैं।

गुरु पूर्णिमा का इतिहास महर्षि वेदव्यास से जुड़ा हुआ है। माना जाता है कि इसी दिन उनका जन्म हुआ था। उन्होंने चारों वेदों का विभाजन किया, महाभारत जैसे विश्व के सबसे बड़े महाकाव्य की रचना की तथा अठारह पुराणों का संकलन किया। भारतीय ज्ञान परंपरा को व्यवस्थित रूप देने के कारण उन्हें 'आदि गुरु' कहा जाता है। यही कारण है कि गुरु पूर्णिमा को व्यास पूर्णिमा के नाम से भी जाना जाता है। इस दिन देशभर में महर्षि वेदव्यास को श्रद्धापूर्वक स्मरण किया जाता है। भारतीय संस्कृति में गुरु का स्थान भगवान से भी ऊँचा माना गया है। संत कबीर का प्रसिद्ध दोहा आज भी हमें गुरु के महत्व का बोध कराता है :

"गुरु गोविंद दोऊ खड़े, काके लागूँ पाय। बलिहारी गुरु आपने, गोविंद दियो बताय॥" अर्थात यदि गुरु और भगवान दोनों सामने खड़े हों, तो सबसे पहले गुरु को प्रणाम करना चाहिए, क्योंकि गुरु ही हमें भगवान तक पहुँचने का मार्ग दिखाते हैं।

प्राचीन भारत की गुरुकुल व्यवस्था केवल शिक्षा का माध्यम नहीं थी, बल्कि व्यक्तित्व निर्माण की प्रयोगशाला थी। वहाँ विद्यार्थियों को वेद, शास्त्र और विज्ञान के साथ-साथ अनुशासन, सेवा, धैर्य, करुणा और नेतृत्व जैसे जीवन मूल्यों की शिक्षा दी जाती थी। भगवान श्रीराम ने गुरु वशिष्ठ और विश्वामित्र से शिक्षा प्राप्त की, जबकि भगवान श्रीकृष्ण ने गुरु सांदीपनि के आश्रम में रहकर ज्ञान अर्जित किया। अर्जुन को महान धनुर्धर बनाने में गुरु द्रोणाचार्य की भूमिका इतिहास का महत्वपूर्ण अध्याय है। ये उदाहरण बताते हैं कि महान व्यक्तित्वों के पीछे एक महान गुरु अवश्य होता है।

समय बदला, शिक्षा के साधन बदले और तकनीक ने ज्ञान प्राप्त करने के नए रास्ते खोल दिए। आज इंटरनेट, ऑनलाइन कक्षाएँ और कृत्रिम बुद्धिमत्ता कुछ ही क्षणों में लाखों जानकारियाँ उपलब्ध करा देते हैं। लेकिन जानकारी और ज्ञान में अंतर होता है। जानकारी हर कोई दे सकता है, पर सही निर्णय लेने की क्षमता, नैतिक मूल्यों की समझ और जीवन का उद्देश्य केवल एक सच्चा गुरु ही सिखा सकता है। इसलिए तकनीक चाहे जितनी विकसित हो जाए, गुरु का स्थान कभी नहीं ले सकती।

गुरु पूर्णिमा केवल धार्मिक या सांस्कृतिक उत्सव नहीं रही, बल्कि समाज को जोड़ने वाला प्रेरणादायक पर्व बन चुकी है। विद्यालयों और विश्वविद्यालयों में विद्यार्थी अपने शिक्षकों का सम्मान करते हैं, सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित होते हैं और गुरुजनों का आशीर्वाद लिया जाता है।

आश्रमों और आध्यात्मिक केंद्रों में सत्संग, भजन, ध्यान, यज्ञ और सेवा कार्य आयोजित किए जाते हैं। कई स्थानों पर वृक्षारोपण, रक्तदान, पुस्तक वितरण और जनकल्याण के कार्यक्रम भी इस दिन आयोजित किए जाते हैं, जो इस पर्व को सामाजिक जिम्मेदारी से भी जोड़ते हैं। गुरु पूर्णिमा हमें केवल अपने गुरु का सम्मान करना ही नहीं सिखाती, बल्कि स्वयं को भी परखने का अवसर देती है। यह दिन हमें सोचने के लिए प्रेरित करता है कि क्या हम अपने गुरु द्वारा दिए गए ज्ञान का सही उपयोग कर रहे हैं? क्या हम अपने जीवन में ईमानदारी, अनुशासन और मानवता जैसे मूल्यों का पालन कर रहे हैं? यदि शिक्षा केवल अंक प्राप्त करने का माध्यम बन जाए और उसमें संस्कार न हों, तो उसका उद्देश्य अधूरा रह जाता है।

आज के युवा तेजी से बदलती दुनिया में सफलता की दौड़ में आगे बढ़ रहे हैं। ऐसे समय में गुरु की भूमिका और भी महत्वपूर्ण हो जाती है। गुरु केवल करियर नहीं बनाते, बल्कि चरित्र भी गढ़ते हैं। वे हमें सिखाते हैं कि सफलता का वास्तविक अर्थ केवल धन या पद नहीं, बल्कि अच्छा इंसान बनना है। यही शिक्षा जीवनभर हमारे साथ रहती है। गुरु केवल विद्यालय या आश्रम तक सीमित नहीं होते। जीवन का हर अनुभव, हर चुनौती और हर वह व्यक्ति जो हमें सही दिशा दिखाए, किसी न किसी रूप में हमारा गुरु बन जाता है। एक सच्चा गुरु शिष्य को केवल सफलता प्राप्त करना नहीं सिखाता, बल्कि असफलताओं से सीखकर दोबारा उठ खड़े होने का साहस भी देता है। गुरु पूर्णिमा का सबसे बड़ा संदेश यही है कि जीवन में ज्ञान से बड़ा कोई धन नहीं और गुरु से बड़ा कोई मार्गदर्शक नहीं। जो व्यक्ति अपने गुरु का सम्मान करता है, वह जीवन में कभी दिशा नहीं खोता। गुरु हमें केवल मंज़िल तक पहुँचने का रास्ता नहीं दिखाते, बल्कि कठिन परिस्थितियों में भी आगे बढ़ने का साहस देते हैं।

अंततः गुरु पूर्णिमा केवल एक पर्व नहीं, बल्कि भारतीय संस्कृति की आत्मा है। यह हमें विनम्रता, कृतज्ञता, ज्ञान और संस्कार का महत्व समझाती है। आइए, इस गुरु पूर्णिमा पर हम केवल अपने गुरुजनों का सम्मान ही न करें, बल्कि उनके द्वारा दिए गए आदर्शों को अपने जीवन में उतारने का भी संकल्प लें। क्योंकि सच्ची गुरु-दक्षिणा उपहारों से नहीं, बल्कि उनके ज्ञान को अपने आचरण में अपनाने से होती है। जब प्रत्येक विद्यार्थी अपने गुरु के बताए मार्ग पर चलेगा, तभी ज्ञान का प्रकाश समाज और राष्ट्र को नई ऊँचाइयों तक ले जाएगा।

अब किताबों से बाहर सीखेंगे विद्यार्थी

मदस विवि और नगर निगम की पहल से मिलेगा जमीनी अनुभव

अजमेर. कक्षा में सीखी गई पढ़ाई अब सीधे शहर के विकास कार्यों से जुड़ सकेगी। महर्षि दयानंद सरस्वती विश्वविद्यालय (मदस विवि) और अजमेर नगर निगम के बीच गुरुवार को हुए महत्वपूर्ण समझौता ज्ञापन (एमओयू) के बाद विद्यार्थियों को नगर प्रशासन की कार्यप्रणाली को नजदीक से समझने और वास्तविक परियोजनाओं पर काम करने का अवसर मिलेगा। यह पहल विद्यार्थियों को केवल डिग्री तक सीमित नहीं रखेगी, बल्कि उन्हें व्यवहारिक अनुभव और शोध से भी जोड़ेगी।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 और विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के दिशा-निर्देशों के अनुरूप हुए इस समझौते के तहत स्नातक एवं स्नातकोत्तर विद्यार्थी शहरी नियोजन, ठोस अपशिष्ट प्रबंधन, जनस्वास्थ्य, नागरिक प्रशासन, सामुदायिक विकास, जल संरक्षण और सतत विकास लक्ष्यों से जुड़े विभिन्न कार्यों में प्रशिक्षण प्राप्त करेंगे। विशेष बात यह है कि यह प्रशिक्षण विद्यार्थियों के शैक्षणिक मूल्यांकन का हिस्सा होगा, जिससे उन्हें सीखने के साथ अकादमिक लाभ भी मिलेगा। एमओयू के माध्यम से विश्वविद्यालय और नगर निगम स्थानीय समस्याओं के समाधान के लिए संयुक्त शोध परियोजनाओं पर भी काम करेंगे। विद्यार्थियों को नगर निगम की विकास योजनाओं में भागीदारी का अवसर मिलेगा, जिससे वे समाज की वास्तविक चुनौतियों को समझते हुए उनके समाधान में अपनी भूमिका निभा सकेंगे। प्रशिक्षण पूरा करने वाले विद्यार्थियों को प्रमाण-पत्र भी प्रदान किए जाएंगे। इस पहल के सफल संचालन के लिए विश्वविद्यालय के पर्यावरण विज्ञान एवं सुदूर संवेदन विभाग तथा नगर निगम की ओर से नोडल अधिकारी नियुक्त किए जाएंगे, जबकि प्रिया संस्था तकनीकी सहयोग उपलब्ध कराएगी। तीन वर्षों के लिए प्रभावी यह समझौता विद्यार्थियों में कौशल विकास, रोजगारपरक क्षमता और सामाजिक उत्तरदायित्व की भावना को मजबूत करने की दिशा में महत्वपूर्ण कदम माना जा रहा है।

एमओयू हस्ताक्षर कार्यक्रम में कार्यवाहक कुलसचिव कैलाश चंद्र शर्मा, नगर निगम के उपायुक्त (प्रशासन) श्रवण कुमार, पर्यावरण विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रोतो दत्ता, प्रो. प्रवीण माथुर, डॉ. विवेक शर्मा, सहायक अभियंता बबीता सिंह, रौनक चौधरी तथा प्रिया संस्था से डॉ. रबी राज सहित विश्वविद्यालय और नगर निगम के अधिकारी उपस्थित रहे।

सिर्फ पढ़ाई नहीं, विरासत भी सहेजेगा एमडीएसयू

प्रतिमाओं की देखरेख अब विभागों की जिम्मेदारी

अजमेर. महर्षि दयानन्द सरस्वती विश्वविद्यालय ने परिसर विकास को नई दिशा देते हुए सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण की जिम्मेदारी पूरे विश्वविद्यालय परिवार के साथ साझा करने का निर्णय लिया है। विश्वविद्यालय परिसर में स्थापित महापुरुषों और देवी-देवताओं की प्रतिमाओं के रखरखाव के लिए अब शिक्षण विभागों और प्रशासनिक इकाइयों को वार्षिक दायित्व सौंपे जाएंगे। इस व्यवस्था को प्रभावी बनाने के लिए विश्वविद्यालय ने परिसर विकास एवं नियोजन प्रकोष्ठ का गठन किया है।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल के अनुमोदन से गठित यह प्रकोष्ठ परिसर के विकास, सौंदर्यीकरण और नियोजन से जुड़े विषयों पर कार्य करेगा। इसके अध्यक्ष पर्यावरण विज्ञान विभागाध्यक्ष प्रो. सुब्रत दत्ता होंगे, जबकि प्रो. सुभाष चन्द्र, राजेन्द्र तिवारी और सीताराम जोशी को सदस्य बनाया गया है। समिति समय-समय पर आवश्यक सुझाव देकर विकास कार्यों की दिशा तय करेगी। नई व्यवस्था के अनुसार प्रत्येक विभाग को एक

निर्धारित दिन आवंटित किया जाएगा। उस दिन संबंधित विभाग प्रतिमाओं की स्वच्छता, माल्यार्पण, दीप प्रज्वलन और सम्मानजनक संरक्षण की जिम्मेदारी निभाएगा। विश्वविद्यालय प्रशासन का मानना है कि इस पहल से परिसर की सांस्कृतिक पहचान मजबूत होगी और विद्यार्थियों व कर्मचारियों में साझा उत्तरदायित्व की भावना भी विकसित होगी।

कुलगुरु प्रो. सुरेश कुमार अग्रवाल ने कहा कि विश्वविद्यालय केवल शिक्षा प्रदान करने वाला संस्थान नहीं है, बल्कि भारतीय संस्कृति और जीवन मूल्यों का भी संवाहक है। परिसर की प्रत्येक प्रतिमा, भवन और सार्वजनिक स्थल संस्थान की गरिमा और इतिहास का प्रतिनिधित्व करते हैं। इसलिए इनका संरक्षण पूरे विश्वविद्यालय परिवार की सामूहिक जिम्मेदारी है।

इस अभियान में सभी शिक्षण विभागों के साथ परीक्षा शाखा, वित्त एवं लेखा, शोध निदेशालय, सामान्य प्रशासन, रजिस्ट्रार कार्यालय, कुलगुरु सचिवालय, राष्ट्रीय सेवा योजना, उद्यान शाखा, स्वच्छता अनुभाग, स्वदेशी कंसोर्टियम तथा परिसर में कार्यरत सभी प्रशासनिक इकाइयों की भागीदारी सुनिश्चित की जाएगी। विश्वविद्यालय का उद्देश्य विकास कार्यों के साथ-साथ सांस्कृतिक और आध्यात्मिक विरासत को भी संस्थागत रूप से संरक्षित करना है।

माननीय कुलगुरु प्रोफेसर सुरेश कुमार अग्रवाल जी के मार्गदर्शन में, पत्रकारिता एवं जनसंचार विभाग के द्वितीय सेमेस्टर के विद्यार्थी – लोकेश कश्यप, नेहा शर्मा और मानसी माहेश्वरी के संयुक्त प्रयास से ई -पेपर तैयार किया गया।